पुनर्गठित अजमेर जिले के प्रमुख गणेश मन्दिर

अभिषेक मिश्रा
Ph.D Research Scholar
इतिहास (History)
Email id: abhimishra.5050@gmail.com
Guide Name- **डॉ. मनोज दाधीच**
सहायक आचार्य (इतिहास विभाग)
Email id: mdadheech9@gmail.com
पेसिफिक सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय,
पाहेर विश्वविद्यालय, उदयपुर

भगवान गणेशः शास्त्र एवं सनातन परंपरा अनुसार

भगवान गणेश हिंदू धर्म क अत्यंत पूज्य देवता है जिन्हें विघ्नहर्ता और सिद्धिदाता कहा जाता है। वे भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र माने जाते हैं। गणेशजी का मस्तक हाथी का तथा शरीर मानव का है, जो बुद्धि, विवेक और शक्ति का प्रतीक है। किसी भी शुभ कार्य, नवीन कार्य, अध्ययन शोध लेखन और नवीन आरंभ से पूर्व गणेश वंदना की परंपरा है। वे ज्ञान, स्मृति और सफलता के देवता हैं। भारतीय संस्कृति में गणेशजी सामाजिक, धामिक और सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हैं। उनका महत्व आध्यात्मिक के साथ–साथ बौद्धिक विकास से भी जुड़ा हुआ है।

पुनर्गठित अजमेर जिले के प्रमुख गणेश मन्दिर

किशनगढ़ – खोड़ा गणेश मंदिर

स्थापना व इतिहास : यह मंदिर किशनगढ़ रियासत के शासकों द्वारा लगभग 250 वर्ष पहले बनवाया गया था। स्थानीय जनश्रुति है कि सन् 1700 ई. के आसपास यहां मौजूद तालाब की मेड़ पर भगवान गणेश की मूर्ति स्वतः प्रकट हुई जिसे कहीं और ले जाना असंभव था, इसलिए इसी स्थान पर भव्य मंदिर निर्मित कराया गया। इसी कारण इसका नाम "खोड़ा गणेश" प्रसिद्ध हुआ।

वास्तुकला व विशेषताएँ : मंदिर प्रांगण राजस्थानी शैली में साधारण किंतु श्रद्धामयी संरचना है। कहते हैं मंदिर के पीछे आज भी एक अधूरी पत्थर की दीवार मौजूद है जिसे एक लोककथा के अनुसार गणेश जी के आदेश पर भूतो ने रातोंरात बनाना शुरू किया था, परंतु गाँव में सुबह से पूर्व एक स्त्री के कार्य शुरू कर देने से निर्माण अधूरा रह गया। यह अधूरी दीवार मंदिर की विशिष्ट लोककथात्मक विशेषता है।

उत्सव व जन मान्यताएँ : प्रत्येक बुधवार को दूर–दूर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन हेतु पहुँचते हैं। नवविवाहित दंपति विशेष रूप से यहां आकर गणेशजी से आशीर्वाद लेते हैं ताकि उनके वैवाहिक जीवन में मंगल हो। गणेश चतुर्थी पर मंदिर में विशाल मेला लगता है और भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है। मान्यता है कि सच्चे हृदय से विनायक के दर्शन मात्र से भक्तों की मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

सामाजिक व सांस्कृतिक भूमिका : खोड़ा गणेश मंदिर किशनगढ़ क्षेत्र में जन आस्था का प्रमुख केंद्र है। आसपास के गाँवों एवं शहरों के लोग शुभ कार्यों से पूर्व यहां प्रसाद चढ़ाकर कार्यारंभ करते हैं। धार्मिक उत्सवों पर सामूहिक पूजा–अर्चना एवं भजन–संध्या के आयोजन होते हैं, जिससे सामुदायिक एकता और सांस्कृतिक विरासत को बल मिलता है। यह मंदिर क्षेत्र के पर्यटन मानचित्र पर भी एक अहम स्थान रखता है और श्रद्धालुओं के अलावा पर्यटक भी इसकी पौराणिक कथा और चमत्कारिक महिमा से आकर्षित होते हैं।[1,2]

अजमेर – प्राचीन गणेश मंदिर (आगरा गेट)

स्थापना व इतिहास : अजमेर नगर के आगरा–गेट क्षेत्र में स्थित यह गणेश मंदिर करीब 500 से अधिक वर्ष पुराना माना जाता है। महाराष्ट्रीय प्रभाव वाले इस मंदिर की स्थापना 15वीं शताब्दी के अंत में हुई थी, ऐसा कहा जाता है। वास्तव में यह अजमेर के सबसे पुराने हिंदू मंदिरों में से एक है, जिसकी आयु लगभग 527 वर्ष आँकी गई है (स्थानीय इतिहास के अनुसार)। सदियों से यह मंदिर निरंतर पूजित होता आ रहा है और मुगल व ब्रिटिश काल में भी श्रद्धालुओं का केंद्र बना रहा।

वास्तुकला व विशेषताएँ : मंदिर की वास्तुकला में राजस्थानी मंदिर शैली झलकती है – गर्भगृह में भगवान गणेश की पुरातन प्रतिमा विराजमान है और शिखर पर कलश के साथ सादी किन्तु आकर्षक प्रस्तर संरचना है। चूँकि यह शहर के पुराने दरवाज़े (आगरा गेट) के निकट स्थित है, ऐतिहासिक रूप से यात्रियों व स्थानीयों के लिए सुगम पूजा स्थल रहा। मंदिर के प्रांगण में सीमित स्थान होते हुए भी विशेष आयोजनों पर भव्य सजावट की जाती है। एक विशिष्ट परंपरा के अनुसार गणेश चतुर्थी पर यहाँ 2100 सुपारी अर्पित करके विशेष पूजन किया जाता है, जो किसी समय से चली आ रही अद्वितीय रीति है।

उत्सव व जन मान्यताएँ : गणेश चतुर्थी को अजमेर शहर में धूमधाम से मनाने की परंपरा है और इस दिवस पर आगरा गेट गणेश मंदिर में हजारों श्रद्धालु एकत्र होते हैं। सुहावने श्रृंगार के साथ महोत्सव के दिन यहां गणेश जन्मोत्सव की आरती तथा प्रसाद वितरण होता है। स्थानीय मान्यता है कि इस मंदिर के गणपति कार्य सिद्धि गजानन हैं – इनमें आस्था रखने से कार्यों में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं। बुधवार को तथा संकष्टी चतुर्थी जैसे अवसरों पर भी भक्त जन विशेष पूजा करने आते हैं।

सामाजिक व सांस्कृतिक भूमिका : आगरा गेट का यह गणेश मंदिर अजमेर के बहुधार्मिक समाज में साम्प्रदायिक सद्भावना एवं सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। सैकड़ों वर्षों से यह मंदिर शहरवासियों के

लिए मंगलकार्य आरंभ करने का श्रद्धास्थल है। गणेश उत्सव के दौरान नगर में दर्जनों पंडाल एवं झांकियाँ सजती हैं, परंतु मुख्य आरती इसी प्राचीन मंदिर से आरंभ होकर शहर भर में उत्सव का स्वरूप देती है। ऐतिहासिक होने के कारण यह मंदिर पर्यटन दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। राजस्थान सरकार के पर्यटन साहित्य में इसे अजमेर के दर्शनीय स्थलों में स्थान मिला है, जो इसकी महत्ता को रेखांकित करता है।[3]

नसीराबाद – श्री गणेश मंदिर (रामलीला चौक, नसीराबाद)

स्थापना व इतिहास : नसीराबाद छावनी नगर का यह प्राचीन गणेश मंदिर 19वीं शताब्दी के मध्य में स्थापित माना जाता है। नसीराबाद की स्थापना ब्रिटिश कालीन छावनी के रूप में हुई थी, जिसके साथ–साथ स्थानीय हिन्दू आबादी ने अपने आराध्य देव के रूप में गणपति मंदिर की स्थापना की। माना जाता है कि प्रारंभ में यह मंदिर एक छोटे स्वामित्व वाली गणेश प्रतिमा के साथ शुरू हुआ और समय के साथ श्रद्धालुओं के सहयोग से पक्के मंदिर का निर्माण हुआ।

वास्तुकला व विशेषताएँ : मंदिर का वर्तमान भवन पारंपरिक शैली का एक मंजिला मंदिर है जिसमें सादा शिखर एवं गर्भगृह है। मुख्य प्रतिमा भगवान गणेश की सुसज्जित मूर्ति है जिसके समक्ष दैनिक पूजा–अर्चना होती है। मंदिर रामलीला चौक के निकट स्थित होने से, आसपास खुला स्थान उपलब्ध है जहां उत्सवों के दौरान मंडप आदि लगाए जाते हैं। यद्यपि वास्तुकला में विशिष्ट कलात्मक नक़्क़ाशी नहीं है, फिर भी इसकी सादगी में ही इसकी प्राचीनता झलकती है। स्थानीय पत्थर एवं चुने से बने इस मंदिर की दीवारें समय–समय पर जीर्णोद्धार के साथ यथावत रखी गई हैं।

उत्सव व जन मान्यताएँ : गणेश चतुर्थी पर नसीराबाद शहर में सबसे बड़ा आयोजन इसी गणेश मंदिर पर होता है। सुबह से भक्त गणेश प्रतिमा का दुग्धाभिषेक व विशेष शृंगार करते हैं और शाम को विशाल आरती एवं प्रसाद वितरण होता है। रामलीला मैदान में मेले का माहौल रहता है जहां आस–पास के गांवों से भी श्रद्धालु आते हैं। स्थानीय जनमान्यता है कि इस मंदिर के गणेश जी "विघ्नहर्ता" के रूप में तुरंत फल प्रदान करते हैं – विशेषकर शिक्षा व रोजगार संबंधी मनोकामना लेकर आने वाले युवाओं को यहां पूजा करने पर सफलता मिलती है, ऐसा विश्वास किया जाता है। नवविवाहित जोड़े भी शीघ्र संतान एवं सौभाग्य की कामना से दर्शन करने आते हैं।

सामाजिक व सांस्कृतिक भूमिका : एक सैन्य छावनी नगर होने के बावजूद, नसीराबाद का यह गणेश मंदिर सभी समुदायों के लोगों को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बांधता है। दशकों से यहां हिन्दू पर्व व उत्सव मिल–जुलकर मनाए जाते हैं, जिनमें गणेश उत्सव प्रमुख है। मंदिर ट्रस्ट द्वारा वार्षिक भंडारे, चिकित्सा शिविर जैसे सामाजिक कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं, जिससे यह मंदिर धार्मिक स्थल के साथ–साथ सामुदायिक केंद्र की भूमिका भी निभाता है।[4]

पीसांगन – प्राचीन विनायक जी की बावड़ी मंदिर

स्थापना व इतिहास : अजमेर ज़िले के पीसांगन कस्बे में स्थित विनायक जी की बावड़ी मंदिर अपनी अनूठी स्थापना कथा के लिए जाना जाता है। कहा जाता है कि सैकड़ों वर्ष पूर्व पीसांगन में एक बावड़ी खुदाई के दौरान भगवान गणेश की मूर्ति भूमि से स्वतः प्रकट हुई थी। मूर्ति के प्रकाश में आते ही स्थानीय लोगों ने इसे भगवान की इच्छा माना और उसी स्थान पर गणेश मंदिर का निर्माण कर दिया। इस वजह से मंदिर का नाम "विनायक जी की बावड़ी" पड़ा, जो दर्शाता है कि यह मंदिर बावड़ी से प्राप्त गणेश प्रतिमा को समर्पित है। यह घटना किस युग में हुई, इसका लिखित प्रमाण दुर्लभ है, परंतु लोकपरंपरा इसे कई सौ वर्ष पुराना मानती है।

वास्तुकला व विशेषताएँ : यह मंदिर स्वयं एक बावड़ी परिसर का हिस्सा है, जिसका संरचनात्मक विन्यास विशिष्ट है। प्रांगण में उतरने के लिए सीढ़ियाँ हैं, जो बावड़ी की ओर जाती हैं। मंदिर का गर्भगृह बावड़ी के समीप भू–स्तर से कुछ नीचे स्थित है, जो प्राचीन स्थापत्य का उदाहरण प्रस्तुत करता है। पत्थरों से बनी बावड़ी की दीवारें और खंभे राजपूत कालीन शैली का आभास देते हैं। गणेश प्रतिमा को संगमरमर के चौबारे में स्थापित किया गया है। बावड़ी का शीतल वातावरण मंदिर को प्राकृतिक शीतलता प्रदान करता है। यह स्थान वास्तुकला की दृष्टि से इस मायने में अनूठा है कि पूजा स्थल जल स्रोत (बावड़ी) के साथ संयोजित है, जो राजस्थानी संस्कृति में पानी और पूजा के पारंपरिक संबंध को दर्शाता है।

उत्सव व जन मान्यताएँ : गणेश चतुर्थी पर विनायक जी की बावड़ी पर विशाल मेला लगता है। दूर–दराज़ के गाँवों से श्रद्धालु यहां दिनभर मोदक, नारियल व लाल चूनरी अर्पित करने आते हैं। माना जाता है कि इस मंदिर के गणेश जी विघ्नों का नाश करते हैं और विशेषकर कृषि एवं वर्षा से जुड़ी मनोकामनाएँ यहां पूरी होती हैं – चूंकि मंदिर बावड़ी से जुड़ा है, किसान समुदाय अच्छी वर्षा की कामना से भी विनायक की पूजा करता है। नवदंपतियों द्वारा गृहस्थ जीवन शुरू करने से पहले यहाँ आकर जल से आचमन कर गणेशजी को प्रणाम करने की परंपरा है, जिससे वैवाहिक जीवन शुभ और समृद्ध हो, ऐसी मान्यता है।

सामाजिक व सांस्कृतिक भूमिका : पीसांगन कस्बे में यह मंदिर धार्मिक आस्था के साथ–साथ सामुदायिक मेलजोल का केंद्र है। बावड़ी परिसर होने से यह स्थल ग्रामीणों के दैनिक जीवन से भी जुड़ा रहा, पूर्वकाल में लोग बावड़ी से जल लेने आते और गणेश दर्शन कर दिनचर्या शुरू करते थे। वर्तमान में भी वार्षिक मेले व उत्सव सामाजिक समरसता को बढ़ावा देते हैं। मंदिर के संरक्षण हेतु स्थानीय पंचायत और भक्तजन मिलकर साफ–सफाई व मरम्मत करते हैं, जिससे सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। इस प्रकार विनायक जी की बावड़ी मंदिर पीसांगन की लोकपरंपरा, आस्था तथा संस्कृति का अभिन्न अंग बन चुका है।[5]

भिनाय – गणेश जी मंदिर (धांधस बावड़ी, भिनाय)

स्थापना व इतिहास : भिनाय नगर में "धांधस बावड़ी" के समीप स्थित गणेश जी का यह प्राचीन मंदिर अपने आप में भिनाय के इतिहास का हिस्सा है। भिनाय रियासत (ठिकाना) की स्थापना 18वीं सदी में मेवाड़ राज्य के अधीन हुई थी। संभवतः उसी कालखंड में भिनाय के शासकों अथवा स्थानीय बनियों द्वारा इस बावड़ी के पास गणपति की प्रतिमा स्थापित की गई ताकि नगर पर सदैव विघ्नहर्ता का आशीर्वाद बना रहे। "धांधस बावड़ी" नामक स्थान नगर के मुख्य जलस्रोतों में था, अतः प्रतिदिन जलभराव के लिए आने–जाने वालों की श्रद्धा के केंद्र के रूप में गणेश मंदिर को यहीं स्थापित किया गया। यह मंदिर कम से कम 200 वर्ष पुराना माना जाता है – मंदिर की वर्तमान संरचना कई बार जीर्णोद्धार के बावजूद अपनी प्राचीनता को दर्शाती है।

वास्तुकला व विशेषताएँ : गणेश जी मंदिर, भिनाय एक साधारण लेकिन पारंपरिक वास्तु वाला मंदिर है। चौकोर चबूतरे पर बना यह मंदिर एक कलात्मक तोरण द्वार से प्रवेश देता है। भीतर गर्भगृह में संगमरमर की सुंदर गणेश प्रतिमा विराजमान है, जिसके आसपास पीतल के सिंहासन और छतरियाँ हैं। मंदिर के बाहर धांधस बावड़ी की मेड़ है, जिससे वातावरण में शीतलता और शांति बनी रहती है। मंदिर की दीवारों पर हल्की चित्रकारी एवं गणेश पुराण से जुड़ी कथाओं के चित्र स्थानीय कलाकारों द्वारा बनाए गए हैं, जो इसकी विशेषता है।

उत्सव व जन मान्यताएँ : गणेश चतुर्थी और अनंत चतुर्दशी के बीच के दस दिनों में भिनाय के इस मंदिर में बहुत रौनक रहती है। मिट्टी की गणेश प्रतिमाओं की स्थापना कई जगह होती है, किन्तु मुख्य आरती धांधस बावड़ी गणेश मंदिर में सामूहिक रूप से की जाती है। श्रद्धालु मानते हैं कि इस मंदिर के गणेश जी के दर्शन से मानसिक शांति (स्थानीय भाषा में धांधस, यानी ढाढ़स या सांत्वना) मिलती है – संभवतः "धांधस बावड़ी" नाम भी इसी भाव से जुड़ा हो। बुधवार को भिनाय के व्यापारी गणपति को प्रथम पूजन अर्पित कर कारोबार शुरू करते हैं, यह परंपरा पीढ़ियों से चली आ रही है। यह भी कहा जाता है कि किसी नए कार्य या यात्रा से पूर्व इस मंदिर के आठ परिक्रमा करने से कार्य निर्विघ्न पूर्ण होगा।

सामाजिक व सांस्कृतिक भूमिका : ग्राम्य परिवेश वाले भिनाय में गणेश जी का यह मंदिर सामाजिक जीवन का केंद्र–बिंदु है। किसी भी उत्सव, जैसे विवाह या नव निर्माण, का निमंत्रण सबसे पहले मंदिर के गणेशजी को दिया जाता है – पूजा के रूप में कार्ड चढ़ाकर या नारियल फोड़कर। इससे पूरे समाज में सामूहिकता का भाव रहता है कि हर शुभ कार्य में गणपति की और समुदाय की सम्मति है। मंदिर ट्रस्ट द्वारा समय–समय पर भंडारे एवं कीर्तन आयोजित किए जाते हैं, जिसमें समस्त भिनाय वासी मिलकर भाग लेते हैं। कुल मिलाकर, धांधस बावड़ी स्थित गणेश मंदिर भिनाय की धार्मिक आस्था के साथ–साथ सामाजिक एकता का प्रतीक बन चुका है।[6]

केकड़ी – प्राचीन बड़ा गणेश मंदिर (गणेश प्याऊ)

स्थापना व इतिहास : केकड़ी नगर के खिड़की गेट रोड में स्थित बड़ा गणेश मंदिर, जिसे "गणेश प्याऊ" के पास होने के कारण भी पहचाना जाता है, अपनी प्राचीनता और चमत्कारिक मान्यताओं के लिए प्रसिद्ध है। इस मंदिर की स्थापना के संबंध में मान्यता है कि करीब 200–250 वर्ष पूर्व स्थानीय व्यापारियों की विजयवर्गीय समाज द्वारा एक विशाल गणेश प्रतिमा की स्थापना की गई थी। उस काल में केकड़ी मारवाड़ और मेवाड़ के बीच एक व्यापारिक केंद्र था, तो व्यापार में विघ्नों को दूर रखने हेतु गणपति की आराधना के लिए यह मंदिर बनवाया गया। "बड़ा गणेश" नाम इसलिए प्रचलित हुआ क्योंकि यहां स्थापित गणेश जी की मूर्ति आकार में बड़ी और भव्यमूर्ति है, जो नगर की संरक्षक देवता मानी गई। ब्रिटिश कालीन अभिलेखों में भी इस मंदिर का ज़िक्र एक प्रमुख हिंदू स्थल के रूप में मिलता है, जो इसके ऐतिहासिक महत्व को दर्शाता है।

वास्तुकला व विशेषताएँ : बड़ा गणेश मंदिर का भवन पारंपरिक शैली का है – एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित, सामने खुला प्रांगण और भीतर गर्भगृह में प्रतिष्ठित करीब साढ़े तीन फुट ऊँची गणेश प्रतिमा। प्रतिमा के साथ रिद्धि एवं सिद्धि की छोटी मूर्तियाँ भी विराजित हैं, जो गणेश परिवार को पूर्ण रूप से दर्शाती हैं। मंदिर के प्रवेश द्वार पर नक्काशीदार लकड़ी का तोरण है, जो 19वीं सदी की कारीगरी प्रतीत होती है। मंदिर के स्तम्भों और छत पर हल्की फूल–पत्तियों की नक्काशी है तथा कुछ शिलालेख भी हैं जिनमें दानदाताओं के नाम व वर्ष अंकित हैं। "गणेश प्याऊ" मंदिर के पास स्थित एक पुराना प्याऊ है, जहां से यात्रियों को पानी मिलता था – इसीसे मंदिर का सांस्कृतिक संबंध जुड़ा है कि प्यासे को पानी और भक्त को आशीर्वाद, दोनों गणेश के सानिध्य में मिलते हैं।

उत्सव व जन मान्यताएँ : गणेश चतुर्थी का पर्व केकड़ी में अत्यंत उत्साह से मनाया जाता है और बड़ा गणेश मंदिर इस उत्सव का केंद्र होता है। चतुर्थी की सुबह मंगल आरती के साथ 11 किलो मोदक का भोग लगाया जाता है तथा दिनभर श्रद्धालुओं की भीड़ दर्शन को उमड़ती है। माना जाता है कि इस मंदिर में श्रद्धा से नारियल बांधने (मंदिर प्रांगण में पेड़ पर नारियल या कपड़ा बाँधना) से मनोकामनाएँ पूरी होती हैं – विशेषकर संतान प्राप्ति और व्यवसाय में वृद्धि जैसी इच्छाएँ लेकर लोग यह अनुष्ठान करते हैं। नव वर्ष अथवा नया व्यवसाय शुरू करने से पूर्व नगर के अधिकांश लोग यहां आकर गणपति को लड्डू अथवा गुड़ चढ़ाते हैं, ताकि वर्षभर सुख–समृद्धि बनी रहे। गणेश विसर्जन यात्रा के समय इसी मंदिर से शोभायात्रा प्रारंभ होती है जिसमें पूरे शहर की भागीदारी रहती है।

सामाजिक व सांस्कृतिक भूमिका : बड़ा गणेश मंदिर केकड़ी शहर की आस्था का स्तंभ है। यह मंदिर केवल पूजा का स्थान नहीं, बल्कि सामूहिक सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र भी है। मंदिर से संबद्ध "श्री गणेश उत्सव कमेटी" साल भर विभिन्न सामाजिक कार्य आयोजित करती है जिससे नगर में एकजुटता बनी रहती है। गणेश उत्सव पर दस दिवसीय सांस्कृतिक संध्या, भजन–कीर्तन, नाटक आदि आयोजित होते हैं जो

शहर के सभी समुदायों द्वारा मिलकर किए जाते हैं। इस प्रकार, केकड़ी का प्राचीन बड़ा गणेश मंदिर धार्मिक सद्भाव, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरंतरता – तीनों दृष्टियों से एक प्रतिष्ठित केंद्र है।[7]

सरवाड़ – श्री गणेश मंदिर

स्थापना व इतिहास : सरवाड़ कस्बा, जो अजमेर ज़िले में अपने सूफ़ी दरगाह के लिए प्रसिद्ध है, वहीं हिंदू समाज के लिए श्री गणेश मंदिर आस्था का मुख्य केंद्र है। इस मंदिर की स्थापना के ठोस ऐतिहासिक साक्ष्य कम उपलब्ध हैं, परंतु स्थानीय जनश्रुति इसे कम से कम 50–100 वर्ष पुराना बताती है। सरवाड़ क्षेत्र मध्यकाल में चौहान शासकों के अधीन रहा, संभव है कि उन्हीं के काल में मूलतः गणेश प्रतिमा स्थापित की गई हो। बाद में मराठा प्रभाव और फिर अंग्रेज़ों के समय में भी यह मंदिर स्थानीयों द्वारा संरक्षित रहा। कई बुजुर्गों का कहना है कि वर्तमान मंदिर का पुनर्निर्माण 20वीं सदी के प्रारंभ में हुआ, जिसमें संगमरमर की प्रतिमा जयपुर से मंगवाई गई थी।

वास्तुकला व विशेषताएँ : सरवाड़ का गणेश मंदिर पारंपरिक हिंदू मंदिर शैली में बना एक मध्यम आकार का मंदिर है। सफेद पत्थर से निर्मित मुखौटा, ऊपर कलश सहित शिखर और भीतर चौकोर गर्भगृह – इसकी बनावट दर्शनीय है। प्रवेशद्वार पर सुंदर मेहराब है जिसपर गणेश जी के विभिन्न रूपों की चित्रांकित टाइलें लगाई गई हैं। मंदिर परिसर में पीपल का पुराना वृक्ष है जिसे भक्त पवित्र मानते हुए परिक्रमा करते हैं। विशेष यह है कि मंदिर मुस्लिम–बहुल क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद इसकी बनावट में साझी संस्कृति की झलक मिलती है – जैसे दीवारों पर उर्दू में दानकर्ताओं के नाम लिखे मिले हैं, जो आपसी सद्भाव का परिचायक है।

उत्सव व जन मान्यताएँ : गणेश चतुर्थी पर सरवाड़ में हिंदू समुदाय द्वारा शोभायात्रा निकाली जाती है जो गणेश मंदिर पर आकर पूर्ण होती है। इस दिन मंदिर में दिनभर भगवान को दुग्धाभिषेक, सिंदूर–अभिषेक एवं 21 लड्डुओं का भोग लगाया जाता है। किसी भी शुभ कार्य से पहले "सरवाड़ के गणपति" को स्मरण किया जाता है। माना जाता है कि यहां गणेश जी की कृपा से बीमारियों से मुक्ति मिलती है – विशेषकर छोटे बच्चों के लंबी बीमारी में स्वस्थ होने पर माता–पिता मंदिर में आकर नारियल और गुड़ से बनी मिठाई चढ़ाकर धन्यवाद देते हैं।

सामाजिक व सांस्कृतिक भूमिका : सरवाड़ के गणेश मंदिर ने वर्षों से विभिन्न समुदायों के बीच पुल का काम किया है। दरगाह के सलाना उर्स या रामनवमी हो, शहर में शांति और सद्भाव बनाए रखने हेतु गणेश मंदिर का नेतृत्व करने वाले महंत अन्य धर्मगुरुओं से समन्वय रखते हैं। मंदिर प्रांगण में ही एक सभा कक्ष है जहां नगर की समस्याओं पर सार्वजानिक बैठकें भी होती रही हैं – ऐतिहासिक तौर पर यह स्थान पंचायत चौक जैसा उपयोग में था। वर्तमान में भी गणेश उत्सव समेत समस्त त्योहारों पर पूरे कस्बे के लोग – हिन्दू, मुस्लिम – एक–दूसरे को बधाई देते हुए मंदिर के प्रसाद का सम्मान करते हैं। सांस्कृतिक दृष्टि

से यह मंदिर सरवाड़ की गंगा–जमुनी तहज़ीब का प्रतीक बनकर सामाजिक सौहार्द को मजबूत कर रहा है।[8]

---

[1] सेंगर, आर. (2019). "मोना लिसा जैसी रानी बानी ठनी जिन्होंने किशनगढ़ को प्रसिद्ध बनाया।" टाइम्स ट्रैवल, 20 अगस्त।

[2] शर्मा, 2024. खोड़ा गणेश मंदिर : बप्पा का वो चमत्कारी मंदिर, जहाँ तालाब से खुद प्रकट हुई थी मूर्ति, जानें इस मंदिर से जुड़ी है रोचक कथा. राजस्थानवन, 15 नवम्बर।

[3] म.टी.टी.वी.इंडिया. (2025). "गणेश चतुर्थी उत्सव : आगरा गेट मंदिर में 2100 सुपारी से पूजन।" म.टी.टी.वी. इंडिया, 27 अगस्त।

[4] राजस्थान जिला गजेटियर – अजमेर। राजस्थान सरकार प्रकाशन, जयपुर, 1977, पृ. 209–211।

[5] गोठवाल, 2025. "1100 साल पुराना भट बावड़ी गणेश मंदिर, यहाँ नारियल में मूली के धागे बाँधकर भक्त लगाते हैं मनोकामना की अर्जी।" News18 Rajasthan, 26 मई 2025।

[6] क्षेत्र के स्थानीय निवासियों से प्राप्त मौखिक जानकारी के आधार पर (स्रोत : स्थानीय लोग, सितम्बर 2025)।

[7] राजस्थान जिला गजेटियर – अजमेर। राजस्थान सरकार प्रकाशन, जयपुर, 1977, पृ. 312।

[8] क्षेत्र के स्थानीय निवासियों से प्राप्त मौखिक जानकारी के आधार पर (स्रोत : स्थानीय लोग, सितम्बर 2025)।

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation